नव विमर्श
नव चिन्तन

डॉ. नीता दौलतकर
डॉ. राजेन्द्र पोवार

Scanned by CamScanner

6

हृदयेश लिखित 'चार दरवेश' उपन्यास में चित्रित वृद्ध-विमर्श

प्रो. श्रीमती पी.व्ही. गाडवी

'चार दरवेश' हृदयेश जी का यह उपन्यास उन स्थितियों पर केन्द्रित है जो किसी-न-किसी मानवीय मूल्य की संवाहक है। रामप्रसाद, शिवशंकर, दिलीप चन्द्र और चिन्ताहरण अपने अपने जीवन का अनुभव बटोरते हुए पूँजीवादी, लोलुप और बर्बर परिवेश का अपनी-अपनी तरह से सामना कर रहे हैं। चारों की प्रकृति भिन्न है, संघर्ष की शक्ल जुदा, जिजीविषा के स्त्रोत अलग लेकिन इनकी नियति एक है। त्रासद नियति। अत: प्रस्तुत उपन्यास में वर्तमान स्थिति की एक वास्तविक समस्या का ज्वलंत चित्रण है। इस स्थिति में वृद्धों की समस्या कितनी भयावह रूप धारण कर रही है इस का लेखा-जोखा प्रस्तुत उपन्यास एक सच्ची मिसाल है।

उपन्यास का सारांश इस प्रकार है- एक बन्द सूखे नाले की पुलिया पर बनी फसीलनुमा मुँडेर पर हर-दिन शाम के समय चार वृद्ध और स्वयं लेखक इकट्ठा होकर बैठते थे, और अपने-अपने जीवन का अनुभव बटोरते रहते। हर एक की कहानी अलग-अलग है। पहला वृद्ध चिन्ताहरण खुश मिजाज, रंगीन किस्म का हंसमुख है। उनके परिवार में बड़ा बेटा रघुनाथ और उसका परिवार है तो दूसरा बेटा आस्ट्रेलिया में रहता है। बेटी जान्ह्वी ने प्रेम विवाह किया है तो अतुल पढ़ाई कर रहा है। सात साल पहले अतुल को अगुवा किया तब रघुनाथ ने बीस लाख रुपये देकर बेटे को छुडवाया। बेटे के पास इतने पैसे कहाँ से आये यह प्रश्न चिन्ताहरण के मन में हमेशा बना रहता। लेकिन हमेशा की तरह एक ही घर में रहते हुए भी बेटा उनसे दूरी बनाये रखता था। दोनों की स्थिति घड़ी की उन दो सुईयों की भाँति थी, जो एक दूसरे से जुड़ी होने के बावजूद फासला बनाकर चलती है। दुर्भाग्यवश

Scanned by CamScanner

एक दिन बूढ़े चिन्ताहरण को भी अगुवा किया गया। अगुवा करने वाले ने एक करोड़ की माँग की। इस घटना से परिवार समस्या की गन में अड गया। बेटे ने, बहू ने, पोता पोती ने हिम्मत से काम लेने की बात चिन्ताहरण की पत्नी से की। सिर्फ चिन्ताहरण की पत्नी दिन-रात पति के बारे में चिंतित रही। अमेरिका में स्थित बेटे ने तो पूरी तरह मुँह मोड़ लिया। अंत में पत्नी ने सोने की चूडियाँ बेटे रघुनाथ के सामने रखकर छुड़वाने की बात की। लेकिन रघुनाथ ने कहा इतने कम पैसों में पिता जी को छुड़वाया नहीं जा सकेगा। और अंत तक चिन्ताहरण को छुडवा कर घर लाने की किसी ने इन्सानियत नहीं दिखायी।

दूसरे वृद्ध दिलीपचन्द्र जो एक विधवा मौसी के साथ एक मकान में रहते हैं। सीधे सरल सच्चे इन्सान। विवाह के दिन ही पत्नी ने किसी और के साथ प्रेम सम्बन्धों की हकीकत बतायी तो दूसरे दिन उसे स्वयं मायके छोड़कर आये। उन्होंने अपनी कई दुकाने किराये पर दी थीं। लेकिन झूठ-मूठ की लिखा पढ़ी करके उनकी जायदाद पर किरायेदारों ने कब्जा किया। उनके जीवन में कई ऐसी घटनाएँ घटित हुई जिसके लिए वह जिम्मेदार न होकर भी उन्हें निरंतर भुगतनी पड़ी। उनके जीवन में घटित हर वाकया, हर हादसा पुकार कर कह रहा था-दिलीपचन्द्र आप मिसफिट हैं और मिसफिट हैं आज का अनैतिक मूल्यहीन समय जिस शक्म में ढल रहा है उसमें आप के टिके रहने के लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं है। इसका अंततः परिणाम यह हुआ कि दिलीपचन्द्र निराशा की गर्त में ऐसे फँस गये कि जंगल की ओर हमेशा के लिए चले गये।

तीसरा वृद्ध शिवशंकर थोड़ा हकलाने वाले। पेशे से क्लर्क थे। उनका एक बेटा पुनीत और दो बेटियाँ हैं। शिवशंकर किसी एक पोते को तो अपने साथ रखना चाहते थे लेकिन उस इच्छा के भी वे हकदार नहीं रहे। पुनीत ने चालबाजी से माँ-बाप को अपने पास इलाहाबाद बुलवाकर गाँव में स्थित घर दो लाख 20 हजार में बेच दिया। कुछ दिनों बाद शिवशंकर और पत्नी ने यह महसूस किया कि बेटे के साथ आकर रहने का उनका निर्णय बिल्कुल गलत था। घर में उनकी इज्जत न के बराबर थी। गाँव, घर, गाँव के मित्र, माहौल, रिश्ते सब पीछे छूट गये और उन्हीं स्मृतियों में उनकी मनस्थिति अकेलेपन का शिकार हुई और उसी में एक दिन उन्होंने अपने अस्तित्व की पहचान मिटा दी। और इस तरह एक भलेमानस का करुण अंत हुआ।

Scanned by CamScanner

चौथे वृद्ध रामप्रसाद जिन्होंने तीस साल के ऊपर एक सराफी की दुकान में मुनीम जी का पद सँभाला। पत्नी की अचानक मृत्यु। बेटी रम्पो और जमाई राजेश को अपने साथ आकर रहने की सलाह दी। और उनके जीवन की यही बहुत बड़ी गलती साबित हुई। बेटा और दामाद ने उनकी हालत इस तरह बिषाड दी कि जीवन की और छोटी मोटी आवश्यकताओं के लिए वे मोहताज हो गये। अंत में एक बिस्कुट पैकिट दस-दस दिन खाकर काम चलाते थे। बेटी और दामाद का तिरस्कृत व्यवहार उनकी बर्दाश्त से बाहर हो गया। और ऐसी ही घृणित स्थिति में से उन्हें एक पागल कुत्ते ने काटा। इन्सानियत के नाते भी बेटी और दामाद ने उन पर इलाज नहीं करवाया। और अंत में एक बंद कमरे में कुत्ते की तरह भौंकते हुए रामप्रसाद का बुरी तरह अंत हुआ।

इस तरह इन चारों वृद्धों का दरवेशों की तरह करुण अंत वर्णित है। आज की वर्तमान स्थिति में वृद्धों की हालत एक जानवर से भी बदतर हो गयी है। वर्तमान युग में भारत में मूल्यों, संस्थाओं और विचारधाराओं में तीव्रता से परिवर्तन आ रहा है। और इस परिवर्तन से ही कई समस्याओं ने गंभीर रूप धारण किया है। आज-कल वृद्धजनों की बढ़ती समस्याएँ समाज एवं सामाजिक व्यवस्था के नीति निर्धारकों के लिए एक चिंता व चिंतनीय विषय बनती जा रही है। 21 वीं सदी के इस युग में वृद्धों को घर और समाज में जो सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिल रहा है। वृद्धजन अब परिवार के तथाकथित विकास के पथ पर अग्रसर सदस्यों की नजर में बोझ बन गये हैं। 'चार दरवेश' उपन्यास में जब रामप्रसाद की मृत्यु हो जाती है तब चिन्ताहरण के मार्मिक शब्दों से ही आज के वृद्धों की दयनीय अवस्था का सूक्ष्मता से अंकन किया है। चिन्ताहरण कहता है- कुत्ता काटने से पैदा रेबीज से पहले ही उनको अपने बेटी दामाद से काटने से रेबीज हो चुका था। अपनों के काटने से पैदा रेबीज की पीड़ा ज्यादा तकलीफदेह होती है, असहाय बनती किस्मत की और व्यक्ति अपनी मृत्यु की कामना करने लगता है। रामप्रसाद मानसिक रूप से काफी पहले ही मृत हो चुके थे शारीरिक रूप से बाद में हुए। इन शब्दों से वृद्धजनों की तकलीफ, उनकी हताशा, निराशा, अकेलापन, मनोवेदना गहराई से व्यक्त हुई है।

अत: निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि 'चार दरवेश' में हृदयेश जी ने वृद्ध समस्या का ज्वलंत चित्रण बखूबी किया है। चार वृद्धों का दरवेश की तरह भटकते हुए जीवन का अंत सचमुच शोचनीय है। इन वृद्धों

Scanned by CamScanner

को परिवार का मुखिया न मानकर एक बोझ समझा गया। रचनाकार ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि विकास के मार्ग पर बढ़ते हुए शायद हम यह भूल रहे है कि आज जो कुछ भी हमने प्राप्त किया हैं उसमें वृद्धजनों का भी कहीं-न-कहीं अंशदान है। इसको कदापि नकारा नहीं जा सकता। भारतीय संस्कृति के वे मूल आधार स्तम्भ हैं। आधुनिकता के अंधानुकरण में हम अपनी संस्कृति व सभ्यता के अध्याय को छोड़ते चले जा रहे हैं। अत: वृद्धावस्था की इस दुर्दशा पर विवेचित उपन्यास पाठकीय चेतना को उद्वेलित और आंदोलित करता है। अपने ही परिवारों में अपने ही बेटों-बहुओं, बेटियों द्वारा वृद्धों को दिए जा रहे संताप की गर्हित स्थितियों का हृदयद्रावक चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में अत्यन्त गहराई से हुआ है। चार वृद्धों की दारुण मनस्थितियों का चित्रण इतनी सूक्ष्मता से हुआ है कि पाठक का मन अपने आप चिंतनशील बन जाता है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास वृद्धावस्था की असहाय स्थिति, जर्जर शरीर की तरह-तरह की पराश्रित आवश्यकताओं, भावनात्मक शून्य और एकाकीपन, अपनों से पाया दुलार और जीवन में इतना खटने के बाद एक निरर्थकता का बोध और समस्त त्रासद संवेदनाओं को सशक्त रूप में मूर्त करता है।

संदर्भ

1. पुष्पपाल सिंह-भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास
2. मधुरेश-हिन्दी उपन्यास का विकास
3. मीरा गौतम-अन्तिम दो दशकों का हिन्दी साहित्य

♦♦♦

Scanned by CamScanner